



**अन्तरा
शब्दशक्ति**

प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

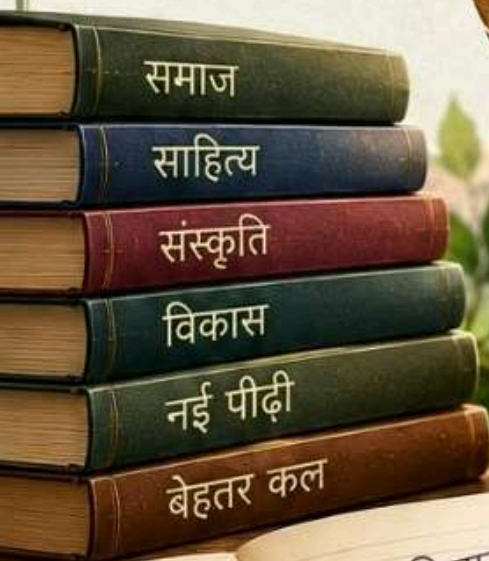
शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

‘समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम’

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...



रचनाकार :-

.....प्रेम प्रकाश शर्मा.....

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

आयोजक:-

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी (म.प्र.)



अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331



Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं।
प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।
रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना
एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना है।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बेहतर कल...



लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - प्रेम प्रकाश शर्मा

वर्तमान में सबसे बड़ी और विकराल समस्या — पर्यावरण प्रदूषण:-



वर्तमान में सबसे बड़ी और विकराल समस्या — पर्यावरण प्रदूषण:-

आज संसार अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है। इनमें पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन सबसे गंभीर समस्याओं में से एक हैं। बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण, वनों की कटाई, वाहनों की बढ़ती संख्या और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन के कारण पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है। वायु प्रदूषण के कारण हवा में हानिकारक गैसों और धूल के कणों की मात्रा बढ़ रही है। इसका प्रभाव मनुष्य, पशु-पक्षियों और पेड़-पौधों पर पड़ता है। जल प्रदूषण भी एक बड़ी चिंता है। नदियों, तालाबों और समुद्रों में कचरा तथा रासायनिक पदार्थ डालने से जल जीवों का जीवन प्रभावित होता है और स्वच्छ पानी की उपलब्धता कम होती है। वनों की कटाई पर्यावरण के लिए विशेष रूप से हानिकारक है। पेड़ कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करके वातावरण को संतुलित रखने में सहायता करते हैं। पेड़ों की संख्या घटने से कार्बन डाइऑक्साइड बढ़ती है और वैश्विक तापमान में वृद्धि होती है। इसके परिणामस्वरूप मौसम में बदलाव, अत्यधिक गर्मी, अनियमित वर्षा, सूखा और बाढ़ जैसी समस्याएँ बढ़ सकती हैं। पर्यावरण की रक्षा करना केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।

हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए, पानी और बिजली की बचत करनी चाहिए, प्लास्टिक का कम उपयोग करना चाहिए तथा सार्वजनिक परिवहन और स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देना चाहिए। कचरे को इधर-उधर फेंकने के बजाय उसका उचित निपटान और पुनर्चक्रण करना भी आवश्यक है। पृथ्वी हमारा साझा घर है। यदि हम आज पर्यावरण की रक्षा के लिए उचित कदम नहीं उठाएँगे, तो आने वाली पीढ़ियों को गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए हमें प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर विकास करना चाहिए और एक स्वच्छ, सुरक्षित तथा स्वस्थ संसार के निर्माण में अपना योगदान देना चाहिए।

चाहिए। आज का युग विज्ञान और तकनीक का युग है। मनुष्य ने विकास के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है, लेकिन इस प्रगति के साथ अनेक गंभीर समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। वर्तमान समय की सबसे बड़ी और विकराल समस्याओं में पर्यावरण प्रदूषण प्रमुख है।

जल, मिट्टी और ध्वनि प्रदूषण ने न केवल प्रकृति का संतुलन बिगाड़ दिया है, बल्कि मानव जीवन के लिए भी गंभीर चुनौतियाँ पैदा कर दी हैं।

प्रदूषण के प्रमुख कारण:-

बढ़ती जनसंख्या, तेजी से हो रहा औद्योगीकरण, शहरीकरण और वाहनों की संख्या में वृद्धि प्रदूषण के प्रमुख कारण हैं। कारखानों से निकलने वाला धुआँ और रासायनिक अपशिष्ट वायु तथा जल को दूषित करते हैं। वाहनों से निकलने वाली जहरीली गैसें वायु की गुणवत्ता को प्रभावित करती हैं। इसके अतिरिक्त प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग, कचरे का अनुचित निपटान, पेड़ों की कटाई और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन भी पर्यावरण को नुकसान पहुँचा रहे हैं। पर्यावरण प्रदूषण का सबसे अधिक प्रभाव आम जनता के जीवन पर पड़ता है। दूषित वायु के कारण साँस संबंधी समस्याएँ बढ़ती हैं, जबकि दूषित जल अनेक बीमारियों का कारण बनता है। प्रदूषण के कारण जीवन-यापन की गुणवत्ता प्रभावित होती है और चिकित्सा पर होने वाला खर्च भी बढ़ सकता है। प्रदूषण का प्रभाव केवल स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। जलवायु परिवर्तन, अनियमित वर्षा, अत्यधिक गर्मी, सूखा और बाढ़ जैसी घटनाएँ कृषि तथा रोजगार को प्रभावित कर सकती हैं। इससे खाद्य पदार्थों की उपलब्धता और कीमतों पर भी प्रभाव पड़ सकता है। इस प्रकार पर्यावरण प्रदूषण समाज के आर्थिक और सामाजिक जीवन को भी प्रभावित करता है।

भारत में बढ़ते प्रदूषण का मुख्य कारण:-

प्रदूषण आज भारत की सबसे गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं में से एक है। वायु, जल, मृदा और ध्वनि प्रदूषण का प्रभाव मनुष्य, पशु-पक्षियों और प्रकृति पर पड़ रहा है। भारत में बढ़ते प्रदूषण के पीछे अनेक कारण हैं, जिनमें तेजी से बढ़ता औद्योगीकरण, शहरीकरण और वाहनों की बढ़ती संख्या प्रमुख हैं। वायु प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण वाहनों और कारखानों से निकलने वाला धुआँ है। पेट्रोल और डीजल से चलने वाले वाहनों से निकलने वाली हानिकारक गैसें वायु की गुणवत्ता को प्रभावित करती हैं। इसके अलावा, कारखानों और बिजली संयंत्रों से निकलने वाला धुआँ भी प्रदूषण बढ़ाता है।

कृषि क्षेत्र में फसल अवशेष जलाना भी कई क्षेत्रों में वायु प्रदूषण का कारण बनता है। इसके साथ ही निर्माण कार्यों से उड़ने वाली धूल, जंगलों की कटाई और कूड़े-कचरे का खुले में जलाया जाना भी प्रदूषण को बढ़ावा देता है।

जल प्रदूषण के प्रमुख कारणों में घरेलू सीवेज, औद्योगिक अपशिष्ट और नदियों में कचरा डालना शामिल हैं। प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग और उसका अनुचित निपटान भी पर्यावरण के लिए बड़ी समस्या बन गया है।

प्रदूषण को कम करने के लिए सरकार के साथ-साथ प्रत्येक नागरिक को भी जिम्मेदारी निभानी होगी। सार्वजनिक परिवहन और स्वच्छ ऊर्जा का उपयोग बढ़ाना, पेड़ लगाना, कचरे का उचित निपटान करना, प्लास्टिक का कम उपयोग करना और औद्योगिक अपशिष्ट को नियंत्रित करना आवश्यक है। प्रदूषण केवल पर्यावरण की समस्या नहीं, बल्कि हमारे स्वास्थ्य और भविष्य से जुड़ा विषय है। यदि समय रहते इसके कारणों को नियंत्रित किया जाए और लोग पर्यावरण के प्रति जागरूक बनें, तो भारत को अधिक स्वच्छ और स्वस्थ बनाया जा सकता है।

समस्या का निवारण:-

इस गंभीर समस्या का समाधान केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि प्रत्येक नागरिक को इसमें योगदान देना होगा। इसके लिए अधिक से अधिक वृक्षारोपण और वनों का संरक्षण किया जाना चाहिए। सार्वजनिक परिवहन, साइकिल और पैदल चलने को प्रोत्साहित करके वाहनों से होने वाले प्रदूषण को कम किया जा सकता है। प्लास्टिक के अनावश्यक उपयोग को कम करना, कचरे को अलग-अलग करके उसका उचित निपटान करना और जल का संरक्षण करना भी आवश्यक है। कारखानों में प्रदूषण नियंत्रण के नियमों का कठोरता से पालन कराया जाना चाहिए। साथ ही, विद्यालयों और सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करनी चाहिए।

जनभागीदारी की आवश्यकता:-

किसी भी बड़ी समस्या का स्थायी समाधान जनभागीदारी के बिना संभव नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में छोटे-छोटे परिवर्तन करके पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे सकता है। बिजली और पानी की बचत, प्लास्टिक का कम प्रयोग, आसपास स्वच्छता रखना और अधिक से अधिक पौधे लगाना ऐसे कदम हैं जिन्हें हर नागरिक अपना सकता है। पर्यावरण प्रकृति का अमूल्य उपहार है और मानव जीवन पूरी तरह उस पर निर्भर है।

यदि विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता नहीं दी गई, तो आने वाली पीढ़ियों को गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए आज आवश्यकता है कि “विकास और पर्यावरण संरक्षण” के बीच संतुलन स्थापित किया जाए। सरकार, उद्योग और आम जनता मिलकर प्रयास करें तो प्रदूषण को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है और एक स्वच्छ, स्वस्थ तथा सुरक्षित भविष्य का निर्माण किया जा सकता है।

- प्रेम प्रकाश शर्मा



लेखक परिचय

नाम - प्रेम प्रकाश शर्मा
वडोदरा, गुजरात





अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा
शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुदेशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ..... **प्रेम प्रकाश शर्मा**जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "एक लेख प्रतियोगिता" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों** को प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिन्दी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था

डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक...

लेखन से परिवर्तन तक...